

# एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला

दिनांक 19 मार्च, 2024 को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित तिलक शास्त्रार्थ सभागार में “बौद्धिक सम्पदा अधिकार : अवधारणा एवं महत्व” विषय पर शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के तत्वाधान में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला की अध्यक्षता प्रो० सीमा सिंह, कुलपति, उ०प्र०रा०ट०म०वि०वि० प्रयागराज ने की तथा मुख्य वक्ता के रूप में प्रो० रमेश चन्द्र गौर, डीन (प्रशासन) इन्दिरा गांधी कला केन्द्र, नई दिल्ली ने ऑनलाइन माध्यम से प्रतिभाग किया।

मौ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यपर्ण एवं दीप प्रज्जवलन उपरान्त प्रो० पी० के० पाण्डेय, निदेशक, शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया तथा कार्यशाला के विषय पर भूमिका को रेखांकित किया।

प्रथम तकनीकी सत्र में अपने ऑनलाइन उद्बोधन एवं पी.पी.टी. प्रदर्शित करते हुए मुख्य वक्ता प्रो० रमेश चन्द्र गौर जी ने बौद्धिक सम्पदा अधिकार की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए नीतिगत प्रिप्रेक्ष्यों को रेखांकित किया। उन्होंने अनुसंधान में नैतिकता की आवश्यकता पर जोर देते हुए शोध के विभिन्न पक्षों में नैतिकता को अक्षुण्य बनाने के उपायों को भी सुझाया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो० सीमा सिंह, मा० कुलपति जी ने सभी प्रतिभागी शिक्षकों एवं शोधार्थियों को शोध की गुणवत्ता उन्नत करने का आवाहन किया तथा शोध में सत्यनिष्ठा के तत्व को बनाए रखने के उपायों को बताया। उन्होंने कार्यक्रम की आवश्यकता एवं सार्थकता को स्पष्ट करते हुए आयोजनों को साधुबाद दिया।

कार्यशाला के हितीय तकनीकी सत्र के विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ० राम जनम मौर्य, प्रभारी पुस्तकालयाध्यक्ष, उ०प्र०रा०ट०म०वि०वि० प्रयागराज ने साहित्यिक चोरी जॉच प्रक्रिया एवं प्रकाशन मानकों के सम्बन्ध में ज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ कियात्मक पक्ष पर प्रशिक्षण प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो० पी०के०पाण्डेय, ने किया। कार्यक्रम में शिक्षकों एवं शोधार्थियों सहित 79 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। यह कार्यक्रम पूर्वान्ह 11.45 बजे से सायं 5.00 बजे तक चला।

